दशपुर से विस्थापन के पश्चात वे प्रश्नोरा से दशोरा हो गए

दशपुर में आगमन- दशोरा ब्राह्मणों का दशपुर में आगमन कई कारणों से यशोधर्मन के समय ही सिद्ध होता है। किन्तु यशोधर्मन का इस जाति को यज्ञ की दक्षिणा में दशपुर का राज्य सौंप देना सिद्ध नहीं होता। यज्ञ की यह घटना राष्ट्रकूटों के समय ई. 730 के आसपास की है जिसका किसी ने राजा यशोधर्मन अथवा दशरथ देव से जोड़ दिया हो। जैसा कि पूर्व में बताया गया है कि यह जाति जूनागढ़ एवं अन्य स्थानों से यवनों के आक्रमण के कारण दशपुर में राजा की शरण में आई होगी। यशोधर्मन से पूर्व यहां वैष्णव धर्मावलम्बी ही थे। यह जाति चूंकि पाशुपत मत को मानने वाली शिवोपासक जाति थी एवं हाटकेश्वर इसके इष्टदेव थे अतः इसके पहुंचने पर ही यहां पाशुपत मत का प्रचार हुआ एवं इसका प्राधान्य रहा। इन्हीं से प्रभावित होकर यशोधर्मा ने भी शैवमत को स्वीकार किया। जिससे इस मत को मानने वालों का आधिक्य हो गया। ये शिवोपासक लोग उस समय गुजरात एवं दक्षिण में ही थे तथा मध्य प्रदेश एवं अन्य उत्तरी राज्यों में वैष्णव धर्म की प्रधानता थी। अतः निश्चित ही यहां शैव धर्म का प्रचार एवं प्रसार इन्हीं के पहुंचने से हुआ। यशोधर्मन से पूर्व यहां पाशुपत मत वालों के कोई प्रमाण नहीं मिलते।

इस जाति के यशोधर्मन के समय दशपुर में पहुंचने की पुष्टि इससे भी होती है कि ये ब्राह्मण अष्टकुल के थे जिससे इन्होंने यहां हाटकेश्वर की अष्टमुखी मूर्ति का निर्माण यशोधर्मन के समय ही किया जिसके ऐतिहासिक प्रमाण हैं। यह मूर्ति इन्हीं के निर्देशन में तैयार की गई होंगी क्योंकि ऐसी मूर्ति अन्यत्र नहीं मिलती। चूंकि इनके इष्टदेव हाटकेश्वर थे अतः ये इसे हाटकेश्वर की मूर्ति मानकर इसकी आराधना, उपासना करते रहे एवं पाशुपत मत के कारण इसे पशुपतिनाथ कहा जाने लगा।

यशोधर्मा के समय इस जाति को राज्य सौंपना तो प्रमाणित नहीं होता किन्तु इसके शासन में विद्वान होने के कारण इनका प्रभुत्व अवश्य रहा था तथा शासन व्यवस्था का कार्य इन्हें सौंपा हो तथा इन्हें उच्चपदों पर नियुक्त किया हो जिससे यहां पाशुपत मत का अधिक प्रचार हुआ एवं दशपुर शैव धर्म का एक महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। इन्हीं ब्राह्मणों के कारण यहां इस समय कला एवं साहित्य का चतुर्दिक विकास हुआ जिसका वर्णन कालीदास एवं हेवनसांग ने भी किया है। यशोधर्मा के समय वासुल एवं कक्क जैसे महान कवि एवं प्रशस्तिकार हुए जो सम्भवतः इसी जाति के लोग थे। जिनकी परम्परा मेवाड़ में आने के बाद बस-तराय सोमनाथ, नरहरि सोटिंग भट्ट, अत्रि, महेश भट्ट, एकनाथ आदि तक चलती रही। यशोधर्मन के बाद इस जाति का प्रभुत्व- यशोधर्मन के बाद भी इस शैव जाति का प्रभुत्व दशपुर पर बना रहा। राष्ट्रकूटों के प्रथम शासक नन्न के समय (ई.711) भी यहां पाशुपत मत का प्राधान्य था जिसमें 'बिनीत राशि' एवं 'दान राशि' इस मत के आचार्य थे तथा इस समय इस मत को राज्धयाश्रय प्राप्त था। ई. 1296-1314 के मध्य जब अल्लाउद्दीन ने मन्दसोर पर आक्रमण किया था तभी सम्भवतः इस जाति का कत्लेआम हुआ हो अथवा जैसा पहले कहा गया है कि किले के निर्माण के समय यह घटना हुई हो जिससे इस जाति के बचे हुए लोग मेवाड़ के राणा की शरण में आये हों। यह घटना अलाउद्दीन के समय की है क्योंकि मेवाड़ में सर्व प्रथम बसन्तराय-शोमनाथ का वर्णन उपलब्ध है जिनका जन्म बि.स.1367 (ई.1310) के आसपास माना जाता है। सम्भवतः इनके पिता जिनका जन्म विक्रम स. 1337 (ई. 1280) के लगभग हुआ था, सर्व प्रथ मेवाड़ में आये हों। इन सब प्रमाणों से यही सिद्ध होता है कि दशपुर में रहने वाले ये पाशुपत मत को मानने वाले निश्चित ही प्रश्नोरा नागर (दशोरा) ही थे जो यहां से विस्थापत होने के बाद अपने को 'दशोरा ब्राह्मण' कहने लगे।

नोट- इस पुस्तक के सम्मति संख्या 1 में श्री भंवरलालजी दशोरा ने संकेत दिया है कि इसमें प्रमाणिक ऐतिहासिक सामग्री जुटाने के प्रयास में कुछ कमियां रही हैं। इससे इसकी प्रामाणिकता विवादग्रस्त बनी है। इस कमी को पूरा करने हेतु यह प्रकरण जोड़ा गया है जिससे इसकी प्रामाणिकता में सन्देह न रहे। फिर भी विद्वानों के सुझाव आमंत्रित हैं।

-सौ. शीला जगदीश दशोरा

गतांक में आपने पढ़ा...

ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर यह स्पष्टहै कि दशपुर में दशोरों का शासन कभी नहीं रहा। पूर्व प्रकरणों में बताया गया है कि यशोधर्मन अथवा अन्य किसी राजा ने इन्हें यज्ञ की दक्षिणा में राज्य दिया था, इस यज्ञ में गुर्जर नरेश को प्रतिहार बनाया गया था। उपरोक्त विवरण में दशपुर का राज्य दक्षिणा में देना प्रमाणित नहीं होता। इस प्रकार इन दशोरा ब्राह्मणों का राज्य मन्दसौर में होना किसी भी प्रकार से ऐतिहासिक दृष्टि से प्रमाणित नहीं होता यह जन श्रुति मात्र ही है... अब आगे..

आचार्य पं. सन्तोष कुमार व्यास (देवज्ञ)
हस्तरेखा विशेषज्ञ, वास्तुविद्, कुंडली मिलान
(ज्योतिष विद्या से बतायें भविष्य फल का आधार श्रद्धा व विश्वास है।)
10, बीमानगर, खजराना रोड़, इन्दौर फोन 3097990, मो. 9425963751